विषय- संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक(प्रतिष्ठा), डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र महाराजा कॉलेज, आरा
कादम्बरी- शुकनासोपदेश दिनांक- 18/07/2020

गद्यांश व्याख्या

अयमेव अनास्वादित विषयरसस्य ते काल उपदेशस्य। कुसुमशरशरप्रहारजर्जरिते हि हृदये जलमिव गलत्युपदिष्टम्। अकारणञ्च भवति दुष्प्रकृतेरन्वयः श्रुतं वा विनयस्य। चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः? किं वा प्रशमहेतुनापि न प्रचण्डतरी भवति वाडवानलो वारिणा?

सान्वय व्याख्या :- (अनास्वादित विषय रसस्य) विषय-रस का आस्वादन न किये हुए (ते उपदेशस्य) तुम्हारे उपदेश का (अयमेव कालः) यही उपयुक्त समय है। (कुसुमशर शर प्रहारजर्जरिते हि हृदये) क्योंकि कामदेव के बाणों के प्रहार से जर्जर हृदय में ~~उपदेश~~ (उपदिष्टम्)

Scanned with CamScanner

उपदेश (जलमिव गलति) जल की भाँति बह जाता है। (दुष्कृतेरन्वयः श्रुतं वा विनयस्य अकारणञ्च भवति) दुष्ट स्वभाव वाले मनुष्य का वंश अथवा शिक्षा नम्रता का कारण नहीं होते। (चन्दनप्रभवोऽनलः किं न दहति) चन्दन से उत्पन्न अग्नि क्या जलाती नहीं है? (किं वा प्रशमहेतुनापि वारिणा वाडवानलो न प्रचण्डतरीभवति) अथवा क्या अग्नि को बुझाने हेतु जल से भी वाड़वाग्नि और अधिक प्रबल नहीं हो जाती?

भावार्थ- प्रस्तुत गद्यांश में मन्त्री शुकनास कहते हैं कि 'हे चन्द्रापीड! तुम्हें उपदेश देने का ठीक समय यही है क्योंकि तुमने अभी तक विषयों का स्वाद नहीं चखा है। एकबार यह स्वाद चख लेने के बाद तो आहुति से अग्नि की भाँति भोग-लालसा उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है। (हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते) प्राकृत जनों के संबन्ध में यह बात ठीक है कि एक बार विषय भोग की लत पड़ी नहीं कि गुरु के सदुपदेश की संजीवनी भी उनके मोह को दूर करने में समर्थ नहीं होती। किन्तु कुलीन एवं शास्त्रज्ञान से सम्पन्न व्यक्ति को तो कभी भी उपदेश से विनीत किया जा सकता है। इस आकांक्षा से कहा गया है कि स्वभाव से पतित व्यक्ति भले ही कितने भी ऊँचे कुल का क्यों न हो, उसे विनय की शिक्षा नहीं दी जा सकती। भारतीय इतिहास में लंकाधिपति रावण का नाम इस तथ्य का ज्वलन्त उदाहरण है। इसलिए कहा गया है -

Scanned with CamScanner

'अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते'
तथा स्वभावो दुरतिक्रमः'।

टिप्पणी- अनास्वादित विषयरसस्य- न आस्वादिताः अनास्वादिताः (नञ्) विषय एव रसा विषयरसाः (क०धा०) अनास्वादिता विषयरसा येन सः (बहु०) तस्य। कुसुमशरशर प्रहार जर्जरिते- कुसुमानि एव शरा यस्य स कुसुमशरः (बहु०) = कामदेव कुसुमशरस्य शराः कुसुमशरशराः (ष० तत्पु०) कुसुमशरशराणां प्रहाराः कुसुमशरशरप्रहाराः (ष० तत्पु०) प्रहारैः जर्जरिते कुसुमशरशरप्रहारजर्जरिते (तृ०तत्पु०)। दुष्प्रकृतेः- दुष्टा प्रकृतिः यस्य सः (बहु०) तस्य। अन्वयः- अनु + इ + अच्। श्रुतम्- श्रु + क्त। चन्दनप्रभवः चन्दनात् प्रभवो यस्य सः (बहु०) भुवः प्रभवः (1·4·31) इति पञ्चमी। प्रशमहेतुना- प्रशमस्य हेतुः (ष० तत्पु०) तेन। प्रचण्डतरी भवति- प्रकर्षेण चण्डः प्रचण्डः (प्रादि) अतिशयेन प्रचण्डः प्रचण्डतरः (प्रचण्ड + तरप्) अप्रचण्डः प्रचण्डतरो भवति प्रचण्डतर + च्वि भू + लट् प्र०पु०ए०। वाडवानलः- वडवाया घोटक्या जातो वाडवः (वडवा + अण्) वाडवश्चासौ अनलश्च वाडवानलः (क० धा०)। इति।